उस व्यक्ति के नाम जो विशेष है

हो सकता है कि हम कभी न मिले हों, परन्तु मैं जानता हूं कि आप एक विशेष व्यक्ति हैं। मुझे यह इसलिए मालूम है क्योंकि किसी ने आपके साथ इन पाठों का अध्ययन करने के लिए आपके बारे में बहुत विचार किया है। मैं यह इसलिए भी जानता हूं क्योंकि इस पुस्तक को पढ़ना आरम्भ करने से आध्यात्मिक बातों में आपकी दिलचस्पी का पता चलता है। संसार में जहां अधिकतर लोगों की दिलचस्पी केवल आज ही के लिए है, वहीं यह आपको सचमुच और भी अधिक विशेष बना देता है!

शायद आप चकित होकर कहें, ''यह है किस विषय पर?'' ''उद्धार को समझना'' शीर्षक से अनन्त उद्धार के विषय पर यह एक गम्भीर बाइबल अध्ययन है।

आपने स्कूल में सम्भवत: अनेक विषयों–भाषा, गणित, इतिहास इत्यादि को पढ़ा होगा। परन्तु उद्धार से अधिक महत्वपूर्ण किसी भी विषय पर कोई शिक्षा नहीं है। यदि परमेश्वर है (और अधिकतर लोग उसके अस्तित्व को मानते हैं), और यदि स्वर्ग है (बहुत से लोगों का विश्वास है कि मृत्यु के बाद जीवन है), तो फिर हमारे लिए यह जानना अति महत्वपूर्ण हो जाता है कि परमेश्वर को इस संसार में और मृत्यु के पश्चात स्वर्ग में जाने पर कैसे प्रसन्न किया जाए।

ध्यान केन्द्रित रखने के लिए, मैं इस पुस्तक के उद्देश्य को इस प्रकार लिख देता हूं:

लक्ष्य: अनन्त जीवन

हम हर उस बात का जो बाइबल कहती है, अध्ययन करने के योग्य नहीं होंगे। हम केवल इन बातों पर ही विचार करेंगे कि मसीही कैसे बना जाए, परमेश्वर को प्रसन्न कैसे किया जाए, और यह सुनिश्चित कैसे हो कि आप परमेश्वर के साथ अनन्त काल के लिए रहेंगे।

इन प्रश्नों के उत्तरों की खोज के लिए हम बाइबल की सहायता लेंगे, क्योंकि यह जानने के लिए कि हम सचमुच परमेश्वर को कैसे प्रसन्न कर सकते हैं, हमें केवल उसकी पुस्तक से ही पता चल सकता है। धर्म के बारे में हमारे सबके अपने–अपने विचार हो सकते हैं, इसलिए महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि आप और मैं क्या सोचते हैं, बल्कि यह है कि

बाइबल क्या कहती है।

क्योंकि यह एक बाइबल अध्ययन है, इसलिए हम बहुत सी आयतों पर ध्यान देंगे। हम बाइबल सोसायटी द्वारा उपलब्ध पुराने अनुवाद का उपयोग अधिक करेंगे और कहीं-कहीं इंडिया बाइबल लिट्रेचर के (ROV) संस्करण का हवाला भी देंगे। कुछ आयतों को उद्धृत किया जाएगा, जबकि अन्यों का केवल हवाला ही दिया जाएगा। अपनी बाइबल से प्रत्येक पद या आयत का मिलान कर लें। यदि आप किसी अन्य अनुवाद का प्रयोग करते हैं,[1] तो मामूली सा शाब्दिक अन्तर होगा; परन्तु जब तक आपके पास बाइबल का विश्वसनीय अनुवाद है, मूल रूप से उनका अर्थ एक जैसा ही होगा। हमारे साथ अध्ययन करते समय, आपको बाइबल सोसायटी ऑफ़ इंडिया द्वारा प्रकाशित पुराने अनुवाद (O.V.) के अतिरिक्त कहीं-कहीं व्यापक इस्तेमाल होने वाले कई अनुवाद, जैसे अंग्रेज़ी के किंग जेम्स वर्ज़न (KJV), द न्यू इन्टरनेशनल वर्ज़न (NIV), द न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल (NASB), द न्यू सैंचुरी वर्ज़न मिलेंगे।

यदि बाइबल अध्ययन आपके लिए नया है, तो आप अपनी बाइबल के आरम्भ में अलग-अलग पुस्तकों की सूची देख सकते हैं। जब आप ''2 पतरस 3:15, 16'' जैसा हवाला पढ़ते हैं तो वहां पर ''2 पतरस'' पुस्तक के नाम के लिए उपयोग किया गया है, इसे दूसरा पतरस या पतरस की दूसरी पत्री पढ़ा जाता है। विवरण (विराम) चिह्न: के पहले का अंक अध्याय संख्या और बाद के अंक उस अध्याय के पद अर्थात आयतों की संख्या बताते हैं। कभी-कभी, आपको आयत संख्या के पीछे दिया हुआ एक शब्द भी मिलेगा; उदाहरण के लिए, ''आयतें 15ख, 16'' का अर्थ होगा कि आयत 15 के दूसरे भाग से पढ़ना आरम्भ करके आयत 16 तक पूरा पढ़ा जाए। (आयतें हमेशा पूर्ण वाक्यों के अनुसार विभाजित नहीं होतीं।) हिन्दी की बाइबल में आयतें इटैलिक्स में नहीं मिलतीं, परन्तु इस पुस्तक में मैंने किसी बात पर ज़ोर देने के लिए उन्हें कहीं-कहीं इटैलिक किया है।

किसी भी वाक्य को पढ़कर, इसके पहले और बाद की आयतों को अवश्य पढ़ें। आयतों को अलग करके उन्हें इस प्रकार सिखाना जिसकी वे शिक्षा नहीं देतीं, सम्भव है। परन्तु हम ऐसा होने नहीं देना चाहेंगे! (दूसरा पतरस 3:15, 16 वचन को तोड़े-मरोड़े जाने की बात करता है।)

इसे एक मुद्रित बातचीत नहीं, बल्कि एक व्यक्तिगत अध्ययन समझें। मैंने इसे आमने-सामने अध्ययन के रूप में लिखा है। पढ़ते समय अपने हाथ में एक पैन या पैन्सिल अवश्य रखें:

- जब आप कुछ ऐसा पढ़ते हैं जो आपको महत्वपूर्ण लगता है, तो उस पर निशान लगा लें।
- यदि आप किसी विचार से असहमत हैं, तो उसे लिख कर रख लें।
- यदि आपका कोई प्रश्न हो, तो इसे भी एक ओर लिख लें।

एक भाग को समाप्त करने के बाद, जिस मित्र ने आपको यह पुस्तक दी है, उससे

संपर्क करें। (उसका नाम और पता पुस्तक के बाहर लिखा हो सकता है।) उससे मिलकर, आप अपने नोट्स उसके साथ साझा करें और अपने प्रश्न बताएं। प्रश्न पूछने के लिए कभी भी हिचकिचाएं नहीं। प्रश्न पूछने से आप मूर्ख नहीं लगेंगे; बल्कि इससे आपकी गहन जिज्ञासा प्रकट होगी।

कभी-कभी, आपके मन में कोई प्रश्न उठने पर, आपको कुछ अधिक पढ़ने के लिए कहा जा सकता है। हो सकता है कि उत्तर अगले किसी पाठ में मिल जाए या हो सकता है कि आपको जब उत्तर दिया जाए तो उसे समझने के लिए अतिरिक्त पृष्ठभूमि की आवश्यकता हो। आश्वस्त रहें कि आपके प्रश्न महत्वपूर्ण हैं और अन्त में उनमें से प्रत्येक का उत्तर देने का प्रयास किया जाएगा।

अध्ययन आरम्भ करने से पहले, कृपया निम्न प्रश्नावली को भर लें। इससे आपके मित्र को आपको अच्छी तरह समझने में सहायता मिलेगी। इसी प्रकार, हम अगले एक पाठ में फिर इस फॉर्म पर ध्यान देंगे। यदि आप निश्चित नहीं हैं कि क्या जानकारी मांगी गई है, तो जितनी जानकारी आप अच्छी तरह दे सकते हैं, उतनी ही दीजिए। यदि आप चाहें तो व्याख्यात्मक टिप्पणियां जोड़ सकते हैं। धन्यवाद!

मेरी प्रार्थना है कि अध्ययन करने में, परमेश्वर हम सब को आशीष दे।

डेविड रोपर

नाम _____

1. जब मेरा उद्धार हुआ था: _____
2. मेरा उद्धार होने से, कितनी देर पहले, मेरा बपतिस्मा हुआ था: _____
3. बपतिस्मा लेने से पहले मैंने क्या अंगीकार किया था: _____
4. जिस कारण से मैंने बपतिस्मा लिया था: _____
5. मेरा बपतिस्मा कैसे हुआ (छिड़काव से, पानी उंडेलकर, अथवा डुबकी से): _____

अतिरिक्त नोट्स/प्रश्न: _____

पाद टिप्पणियां

[1]पुराने नियम का अधिकांश भाग मूलत: इब्रानी भाषा में लिखा गया था, जबकि नया नियम मूलत: कोयनि यूनानी में लिखा गया था। (''कोयनि'' का अर्थ है ''साधारण''; कोयनि यूनानी नये नियम के लिखे जाने के समय साधारण लोगों द्वारा बोली जाने वाली यूनानी भाषा थी।) बाइबल का अनेक भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है। बहुत से लोग पुराने अनुवाद का इस्तेमाल करते हैं। अन्य दूसरे आधुनिक अनुवादों को पसन्द करते हैं जिनमें अधिक परिचित शब्दों का इस्तेमाल किया गया होता है। (इन पाठों के आगे पादटिप्पणियों का दोहरा उद्देश्य है: [1] शब्दों की व्याख्या करना और [2] अतिरिक्त जानकारी देना। आपने जो पढ़ा यदि आप उससे संतुष्ट हैं, तो पादटिप्पणियों पर ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं।)